14

जनसंख्या हमारा प्रमुख संसाधन

हम सभी ने कई लोगों को कहते सुना हैं कि भारत की जनसंख्या एक बड़ी समस्या है। आप भी ऐसा महसूस कर रहे होंगे। आप जानते हैं कि भारत की जनसंख्या एक अरब से अधिक है और यह अभी बढ़ रही है। हो सकता है, यह अगले कुछ दशकों में चीन की जनसंख्या से आगे निल जाये। तत्पश्चात भारत दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश बन जाएगा। इस दृष्टिकोण से आबादी एक भार है, विकास और गुणात्मक जीवन के लिए रोड़ा है। पर क्या यह सत्य है? आइये इसे सोचा और समझा जाए। क्या आबादी देश के लिए संसाधन या सम्पत्ति नहीं है? आज भारत दुनिया में मानव शक्ति के मामले में एक अग्रणी राष्ट्र के रूप में माना जाता है। इस वैश्विक स्तर पर कीर्तिमान स्थापित करने में हमारे देश के युवा, शिक्षित और उत्पादक लोगों की अहम भूमिका है। वे न केवल हमारे देश के विकास के लिए योगदान दे रहे हैं, बल्कि दूसरे देशों के विकास में भी इनका सहयोग है। इस संदर्भ में जनसंख्या अर्थव्यवस्था के लिए एक परिसंपत्ति है, देश का सबसे बड़ा संसाधन है न कि भार। हमारे देश की जनसंख्या किस प्रकार से हमारा सबसे बड़ा संसाधन है, इसके विषय में इस पाठ में जानेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- देश की आबादी को मात्र संख्या और समस्या के रूप में नहीं बल्कि सबसे बड़े संसाधन के रूप में विश्लेषण कर सकेंगे;
- कारकों का आप वर्णन कर सकेंगे जिसके, चलते आबादी एक मानव संसाधन है;
- आबादी के उच्च, मध्ययम और कम घनत्व के क्षेत्रों की पहचान कर सकेंगे और भारत की मानचित्र पर उन्हें दिखा सकेंगे;
- जनसंख्या के वितरण और घनत्व को प्रभावित करने वाले कारको का विश्लेषण कर सकेंगे;
- जनसंख्या संरचना जैसे ग्रामीण-शहरी संरचना, उम्र संरचना, लिंग संरचना और साक्षरता में परिवर्तन के कारण होने वाले प्रभावों की जाँच कर सकेंगे;

- एक महत्त्वपूर्ण जनसंख्या समूह के रूप में किशोरों की जरूरतों को संभावित मानव संसाधन के रूप की सराहना कर सकेंगे;
- भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण की जरूरत की पहचान करेंगे, और भारत सरकार द्वारा अपनाई गई जनसंख्या नीतियों का मानव संसाधन के विकास के संदर्भ में विशेष रूप से मूल्यांकन करेंगे।

14.1 जनसंख्या एक संसाधन के रूप में

आम तौर पर आबादी का मतलब लोगों का एक संग्रह या संख्या से है। आइये, नीचे दिए गये बॉक्स में जनसंख्या के अर्थ को पढ़े। जनसंख्या का अर्थ विभिन्न संदर्भ में अलग-अलग है। जनसंख्या का अर्थ विज्ञान या जीवविज्ञान की पाठ्यपुस्तक में बिल्कुल अलग है। अगर हम सामाजिक विज्ञान जैसे भूगोल, अर्थशास्त्र या समाजशास्त्र की पाठ्यपुस्तकों से तुलना करें तो। बाद में आप यह भी सीखेंगे कि सांख्यिकी में इसका अर्थ अलग है।

क्या आप पता लगाना पसंद करेंगे कि यह क्या है। आप इसके लिए सांख्यिकी की किताबों को देखें। हालांकि, वर्तमान पाठ में हम जनसंख्या शब्द का प्रयोग मानव समूह या मानव संख्या रूप में किया जाएगा। जनगणना में भी यही अर्थ लिया जाता है। प्राथमिक तौर पर जनसंख्या का मतलब लोगों के समूह की संख्या से है। परन्तु जनसंख्या एक संसाधन, मानव संसाधन के रूप में भी माना जाता है।

जनसंख्या से क्या अभिप्राय है?

- किसी भी क्षेत्र विशेष में निवास करने वाले लोगों की कुल संख्या (उदाहरण-गाँव, शहर, राज्य, देश, विश्व की जनसंख्या)।
- किसी भी समूह, नस्ल, वर्ग या श्रेणी के लोगों की कुल संख्या (उदाहरण-अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, धार्मिक समूह जैसे हिन्दू, मुसलमान, इसाई, सिक्ख)।
- जीवविज्ञान में किसी भी नस्ल के अंतर प्रजनन जीवों के सम्मिलित कुल संख्या (उदाहरण-बाद्य, हिरण आदि की संख्या)।

संसाधन क्या है? यह वह है जिसे इस्तेमान और पुन: इस्तेमाल किया जा सके। कमरे में चारों ओर देखों हम विभिन्न वस्तुएँ, जैसे लकड़ी के सामान, किताबें, कांपियां, कलम एवं अन्य पाते है। हम उन्हें अपने संसाधनों के रूप में विचार करते है और उन्हें अपने दैनिक जीवन में उपयोग और पुन: उपयोग करते है।

आइये अब हम उनके श्रोत का पता लगायें। ये उन संसाधनों से बनाये गये है जिन्हें हम प्रकृति से पाते है। फर्नीचर लकड़ी से बनाया गया है जो हम जंगल से प्राप्त करते है। पुस्तकें और कॉपियां भी जंगल से आते हैं जिसे लकड़ी की लुगदी से बनाते हैं। कलम प्लास्टिक से बना है जो पेट्रोलियम का गौण उत्पाद है। कप मृदा से बनता है जिसे हम मिट्टी से प्राप्त करते है। ये और इसके अतिरिक्त अन्य चीजें हैं जो हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा है। हम उन्हें प्राकृतिक संसाधनों से निकालते। संसोधित करते और निर्मित करते है। यह मानव हैं, जो शारीरिक और मानसिक प्रयासों से प्राकृतिक संसाधनों को उपयोगिता की वस्तुओं में बदल देता है।

? क्या आप जानते हैं

भारत सरकार ने 1985 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय बनाया। इसके पूर्व इसे शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय के रूप में जाना जाता था। कुछ राज्यों ने भी ऐसा किया है। इससे पता चलता है कि मानव संसाधन की अवधारणा की स्वीकृति प्राप्त है।

यदि संसाधन खास वस्तुएँ है जिसका प्रयोग और पुन: प्रयोग किया जाता है तो जनसंख्या एक संसाधन कैसे माना जा सकता है? हम सभी जानते है कि अनाज खेतों में उपजता है। खनिज का खनन किया जाता है। कारखानों में वस्तुएँ बनाई जाती है। ये सभी मानव द्वारा की जाती हैं देश के लोग विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ एवं सेवाओं को उत्पादित एव विकसित करते है। जो हमारे जीवन को आरामदेह बनाती हैं। ये सुविधाएँ चाहे यातायात के साधन, स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, बिजलीघर, सिंचाई आदि कोई भी आधारभूत संरचना देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

उत्पादन के लिए ऐसी सुविधाओं के विकास और उन्हें उपयोगी संसाधनों में परिवर्तित करने के लिए मनुष्य सबसे अच्छा संसाधन की भूमिका निभाता है। बिना मनुष्य के अन्य संसाधनों को सही ढंग से विकसित और उपयोग नही किया जा सकता है। इसलिए संख्या के साथ-साथ लोगों की गुणवत्ता दोनो ही देश के वास्तविक और सर्वोच्च संसाधन है।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए लोगों की मात्र संख्या जो आवधिक अंतराल पर जनगणना द्वारा निर्धारित किया जाता है भार हो सकता है लेकिन गुणात्मक जनसंख्या देश का मनाव पूंजी बन जाता है मानव संख्या को मानव पूंजी में परिवर्तित करने के लिए देश को लोगों के स्वास्थ्य एवं पौष्टिक आहार की व्यवस्था, सही शिक्षा, विशिष्ट प्रशिक्षण एवं उनके जीवन में गुणात्मक बदलाव लाने के लिए देश को बहुत बड़ा निवेश करने की आवश्यकता पड़ती है। मानव के जीवन में गुणात्मक सुधार के लिए सरकार एवं समाज द्वारा किया गया निवेश बहुत महत्व रखता है। यह आवश्यक है कि हर व्यक्ति पूरी क्षमता के अनुरूप विकसित हो और देश के विकास की प्रक्रिया में उन्हें काम करने का मौका प्रदान किया जाये। इसीलिए यह महत्वपूर्ण बात समझने की है कि मानव संसाधन के विकास के रूप में एक वस्तु और विकास में भागीदारी है। जैसा कि पहले चर्चा किया गया है, मानव संख्या संसाधन नहीं है, लेकिन कुछ महत्वपूर्ण कारक हैं जो मानव संख्या को उपयोगी संसाधन में परिवर्तित कर देते हैं।

? क्या आप जानते हैं

मानव पूंजी कई वर्षो से कर्मचारियों और कारोबार में जुड़े व्यक्तियों के वर्णन करने के लिए इस्तेमाल होने वाले शब्दों में बदलाव आया है। हम कर्मचारी से मानव संसाधन एवं मानव पूंजी इस्तेमाल करने लगे है। आर्थिक संदर्भ में मानवीय गुणों को मानव पूंजी में दर्शाते है। यह व्यक्ति में सन्निहित कौशल और तकनीकि ज्ञान का मिश्रित रूप में सम्बन्धित है।

जनगणना: किसी भी दिये गये जनसंख्या के कुल इकाइयों के सुव्यवस्थित एवं क्रमबद्ध तरीके से अभिलेख की प्रक्रिया जनगणना कहलाती है। इस शब्द का इस्तेमाल प्रत्येक दश वर्षो के अंतराल पर ''राष्ट्रीय स्तर पर घर-घर की जनगणना'' के रूप में किया जाता है। लोगों के विभिन्न जनांकिकी और सामाजिक आर्थिक संदर्भो के बारे में राज्यों की सहायता से भारत सरकार आंकड़े एकत्रित करती है।

जनसंख्या को मानव संसाधन बनाने के कारक

जनसंख्या को मानव संसाधन के रूप में प्रभावित करने वाले कारक क्या है? ऊपर की चर्चा के आधार पर आप अनुमान कर सकते है कि लोगों की शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति और उनके विशेष प्रशिक्षण मानव संसाधन के रूप में जनसंख्या की गुणवत्ता निर्धारित करते हैं। लेकिन इन के अलावा सामाजिक जनसांख्यिकीय कारक प्रमुख है जिसका प्रभाव जनसंख्या पर एक संसाधन के रूप में पड़ता है। ये हैं: (i) जनसंख्या वितरण, (ii) जनसंख्या वृद्धि और (iii) जनसंख्या संरचना। हम इन तीन कारकों को समझने की कोशिश करेंगे। हम जनसंख्या के वितरण के साथ शुरू करते हैं।

पाठगत प्रश्न 14.1

1. संसाधन से क्या अभिप्राय है?
2. मानव को संसाधन बनाने के लिए आवश्यक गुणों को बताइये।

14.2 जनसंख्या का वितरण

आपको पता है, संसाधन चाहे प्राकृतिक हो या कोई अन्य, उनका वितरण एक समान नहीं है। उदाहरण के लिए जंगल या लौह अयस्क या कोयला जैसे प्राकृतिक संसाधन दुनिया में समान रूप से वितरित नहीं है और हमारे अपने देश में वितरण में एकरूपता नहीं है। मानव संसाधन के साथ भी यही मामला है। वे दुनिया में हर जगह समान रूप से नहीं फैले हैं और उनकी संख्या बदलते रहती हैं। एक क्षेत्र में आबादी के प्रसार को जनसंख्या वितरण कहते है चाहे वह एक राज्य हो या पूरा देश निम्न दिए गये भारत के मानचित्र (चित्र संख्या 14.1) पर नजर दौड़ाएंगे तो आपको दिलचस्प सा लगेगा। यह दर्शाता है कि जनसंख्या का विस्तार भारत के विभिन्न राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों में किस प्रकार है। इसे बिन्दु द्वारा दिखाया गया है। प्रत्येक बिन्दु पाँच लाख लोगों को प्रदर्शित करता है। आप देखते है कि कुछ राज्यों में बिन्दुओं की संख्या कम है जबकि उनका क्षेत्रफल काफी बड़ा है। जिसका मतलब है कि उन राज्यों में जनसंख्या दूर-दूर या साधारण विस्तार है। परन्तु कुछ राज्यों में बिन्दु एक दूसरे के बिलकुल करीब-करीब है, इतने करीब कि मानचित्र का भाग बिन्दु से रंगा हुआ सा लगता है। उनमें जनसंख्या का विस्तार बहुत सघन है। कम आबादी, मध्यम आबादी और घनी आबादी वाले भारत के राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों की एक सूची तैयार करें।

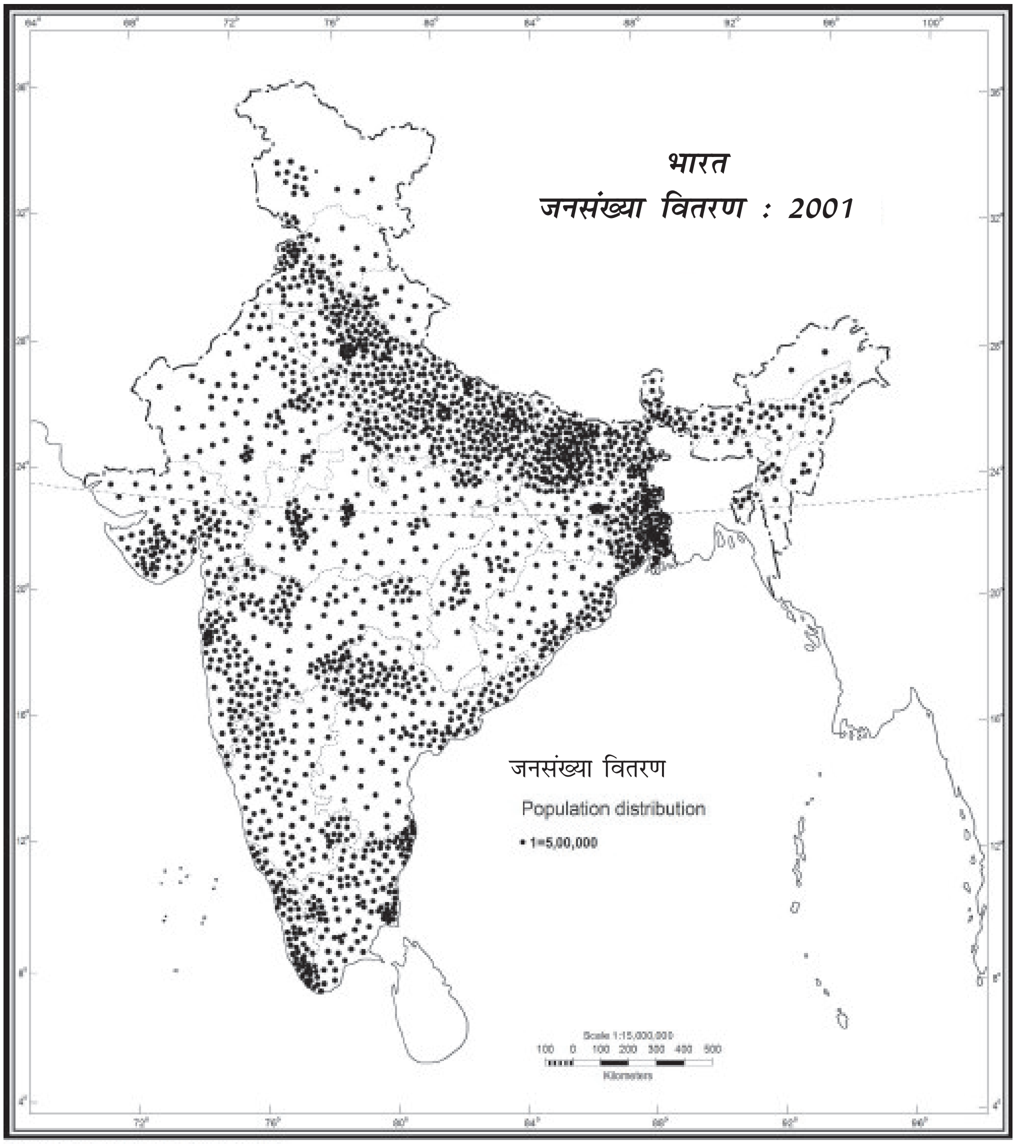

चित्र 14.1 जनसंख्या का भारत में वितरण

14.3 जनसंख्या का घनत्व

ऊपर दिए गये चित्र के आधार पर किसी भी दो राज्य के बीच जनसंख्या वितरण की तुलना बहुत ही रोचक होगा। चलिए, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल राज्यों (चित्र संख्या 14.1) को देखें। इनमें जनसंख्या प्रसार का प्रतिरूप भिन्न है। सामान्य नजर दौड़ाने पर लगता है कि महाराष्ट्र की तुलना करने पर पश्चिम बंगाल में जनसंख्या ज्यादा है। परन्तु यह सही नहीं है। महाराष्ट्र में जनसंख्या पश्चिम बंगाल की तुलना में ज्यादा है पर महाराष्ट्र में जनसंख्या वितरण विरल सा लगता है क्योंकि यह पश्चिम बंगाल से क्षेत्र में बड़ा है। फलस्वरूप जनसंख्या की स्थिति को केवल उसके संख्या को आधार मान कर तुलना नहीं कर सकते। क्षेत्रफल का भी विचार करना आवश्यक है। यही कारण्या है कि किसी भी देश प्रदेश या देश की जनसंख्या की तुलना जनसंख्या घनत्व द्वारा किया जाता है।

मॉड्यूल - 2

भारत : प्राकृतिक पर्यावरण संसाधन तथा विकास

टिप्पणी

क्या आप जानते है

जनसंख्या का घनत्व: जनसंख्या का घनत्व प्रति इकाई क्षेत्र में रहने वाले व्यक्तियों की संख्या है। यह आमतौर पर लोग की संख्या प्रति वर्ग किलोमीटर (वर्ग किमी) के रूप में व्यक्त किया जाता है। इसकी गणना के लिए सूत्र इस प्रकार है।

$$\text{जनसंख्या का घनत्व} = \frac{\text{एक परिभाषित क्षेत्र इकाई में लोगों की कुल संख्या}}{\text{उसी क्षेत्र विशेष का कुल क्षेत्रफल वर्ग कि.मी. में}}$$

घनत्व का निर्धारण करने के लिए एक विशिष्ट क्षेत्र में रहने वाले लोगों की संख्या में उस क्षेत्र के कुल क्षेत्रफल से विभाजित किया जाता है। यह प्रति वर्ग किमी क्षेत्र में रहने वाले व्यक्तियों की औसत संख्या बताता है। उदाहरण के लिए मान लिया जाय कि एक जिले की जनसंख्या 250,000 और क्षेत्रफल 1000 वर्ग किमी है। इस जिले की जनसंख्या घनत्व की गणना निम्न प्रकार किया जासकता है।

जनसंख्या का घनत्व = = 250 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी

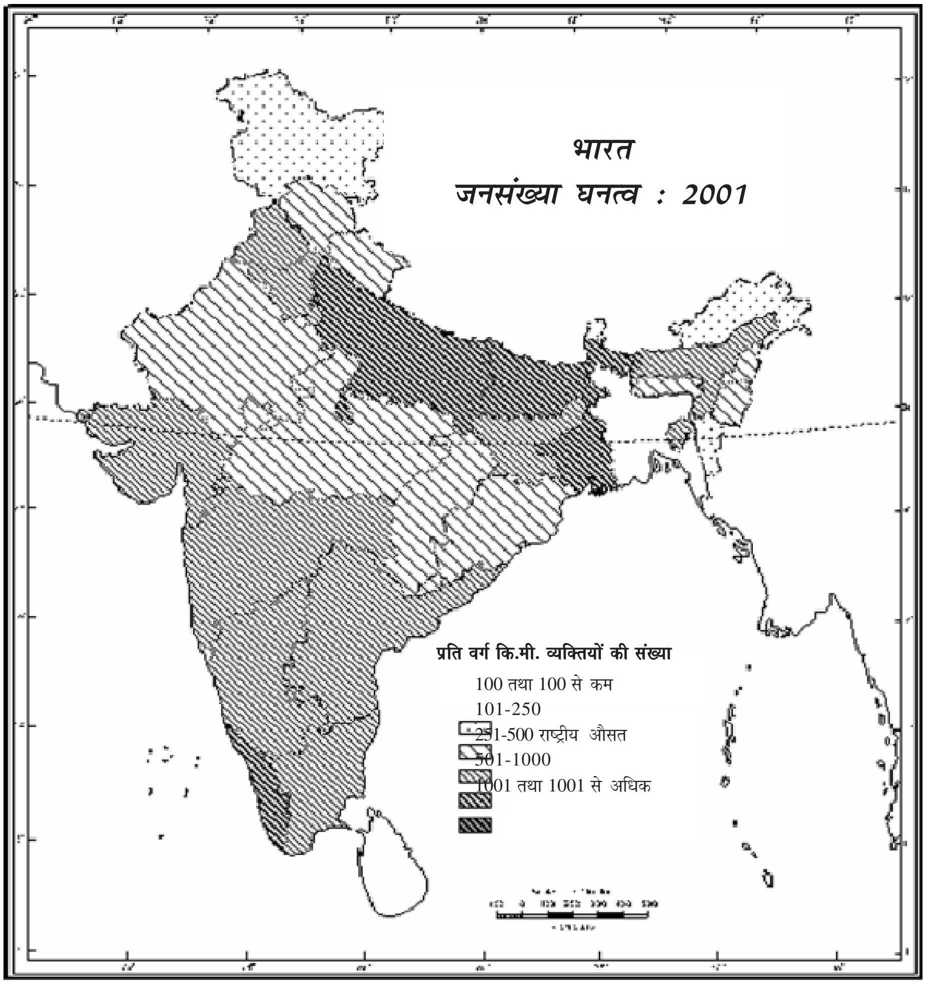

चित्र 14.2 : भारत में जनसंख्या का घनत्व

मानचित्र (14.2) से पता चलता है कि भारत में जनसंख्या का घनत्व असमान है। यह एक राज्य से दूसरे राज्य में भिन्न है।

क्रियाकलाप 14.1

14.2 चित्र को देखिए और उन राज्यों के नाम बताइये जिसकी उच्च (500 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी से अधिक), मध्यम (100-500 व्यक्ति प्रति वर्ग प्रति किमी) और कम (100 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी से कम) घनत्व है।

उच्च घनत्व वाले राज्यों के नाम बताएं।

मध्यम घनत्व वाले राज्यों के नाम बताएं।

कम घनत्व वाले राज्यों के नाम बताएं।

क्या आप राज्यों के बीच घनत्व में होने वाले बदलाव के कारणों को बता सकते हैं?

संकेत: प्रतिकूल कठोर जलवायु परिस्थितियों, बीहड़ इलाके और निम्न मृदा उर्बरता कम घनत्व के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। उपजाऊ मृदा वर्षा की बहुतायत, विकसित सिंचाई की सुविधाएं मध्यम जलवायु और शहरीकरण अधिक जनसंख्या घनत्व का कारण है। औसत उर्वरता, वाले भागों में सामान्य जनसंख्या घनत्व पाया जाता है।

जनसंख्या का घनत्व भी बदलते रहता है। जैसा कि आप चित्र संख्या 14.3 से देख सकते है कि 1901 में भारत में जनसंख्या का घनत्व प्रति वर्ग किमी के 77 व्यक्ति था। यह तेजी से 1931 में 90 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी से बढ़कर 2001 में 325 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी हो गया। आप इस बात को जानने में रूचि रखते होंगे कि भारत के किस राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश में सबसे ज्यादा जनसंख्या घनत्व है। इसके लिए आपको जनगणना रिपोर्ट देखना होगा। 2001 की जनगणना के अनुसार, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली का जनसंख्या घनत्व उच्चतम 9340 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। इसके बाद केन्द्र शासित राज्य चंडीगढ का 7900 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। अरूणाचल प्रदेश में सबसे कम घनत्व 13 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। राज्यों में पश्चिम बंगाल का उच्चतम घनत्व 903 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है।

भारतीय : जनसंख्या घनत्व

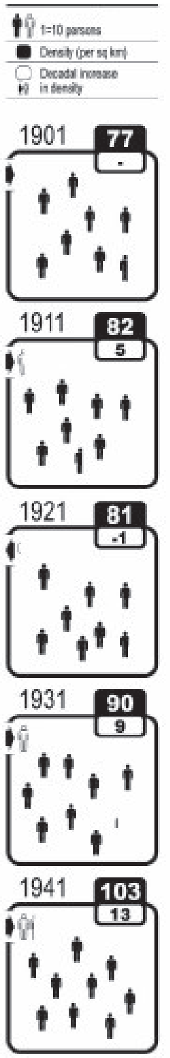

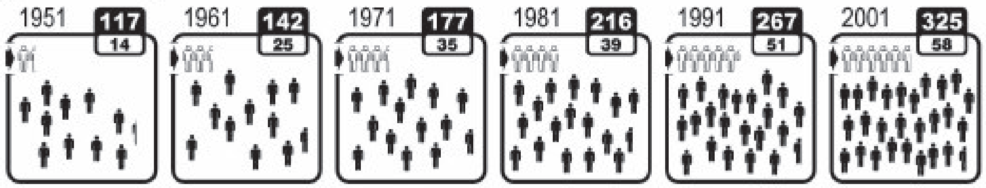

***चित्र* 14.3:** भारत में दशकीय जनसंख्या घनत्व (1901-2001)

जनसंख्या घनत्व और उसके वितरण को प्रभावित करने वाले कारक

जनसंख्या का वितरण असमान क्यों है? यह मानव प्रवृति है कि जहाँ संसाधन आसानी से उपलब्ध होते हैं वहाँ लोग रहना पसंद करते है। इन संसाधनों में मीठे पानी, उपजाऊ मृदा, भोजन, आश्रय, काम के अवसर आदि हो सकता है। इन संसाधनों की उपलब्धता भौगोलिक विशेषताओं द्वारा प्रभावित करता है जो असमान वितरण के कारण हैं। इसलिए जनसंख्या का घनत्व और वितरण भी असमान है। जनसंख्या के वितरण और घनत्व को प्रभावित करने वाले कारकों को दो प्रमुख वर्गों में रख सकते है–प्राकृतिक और सामाजिक-आर्थिक।

प्राकृतिक कारक

जनसंख्या के वितरण और घनत्व को प्रभावित करने वाले तीन प्रमुख प्राकृतिक कारक है यानी उच्चावच, जलवायु और मृदा।

(i) ***उच्चावच:*** आप पहाड़ी क्षेत्र या नदी घाटी और सपाट मैदानी इलाके का दौरा किये होंगे। आपने देखा होगा कि मैदानों की तुलना में पर्वतीय क्षेत्र में आबादी कम है। किसी भी दिए गये क्षेत्र का उच्च और निम्न ऊंचाई और ढाल के बीच का अंतर उच्चावच होता है। ये उच्चावच और ढाल वहाँ की सुगम्यता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। जो क्षेत्र ज्यादा सुगम है वह लोगों द्वारा बसावट से भरी होने की सम्भावना है। यही कारण है कि सपाट मैदानों में ज्यादा बसावट देखी जाती है जबकि बीहड़ उच्चावच वाले पर्वतीय और पठारी भाग ऐसे नहीं है। अगर आप जनसंख्या के घनत्व और वितरण को उत्तरी मैदान और हिमालय पर्वतीय क्षेत्रों की तुलना करें तो आपको उच्चावच का प्रभाव प्रत्यक्ष अनुभव कर सकेंगे।

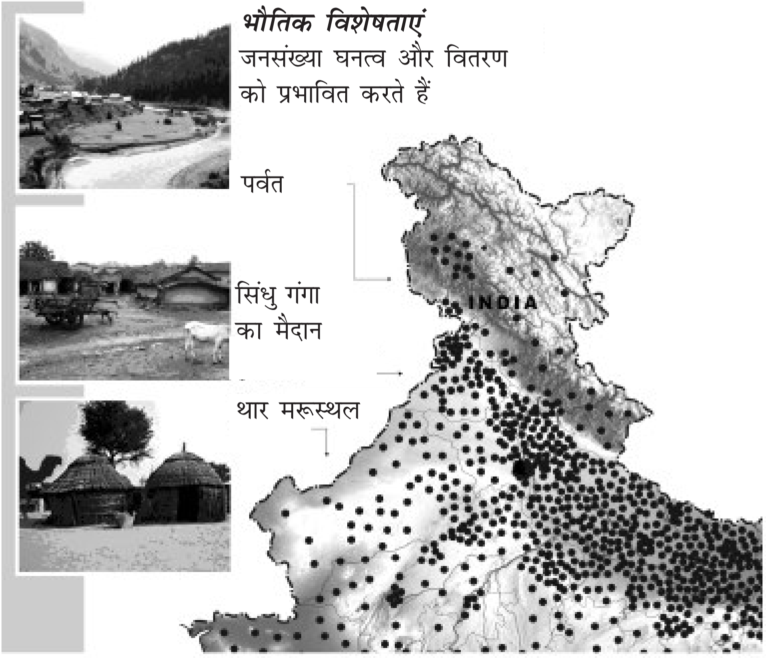

चित्र **14.4:** जनसंख्या को प्रभावित करने वाले कारक

उच्चावच: भूसतह की ऊंचाई में बदलाव जिसके कारण पहाड़ियों एवं घाटियों का निर्माण होता है।

(ii) ***जलवायु:*** जनसंख्या के घनत्व और वितरण को प्रभावित करेन वाले कारकों में से एक एक महत्वपूर्ण कारक जलवायु की स्थितियाँ है। अनुकूल जलवायु मनुष्य के रहने के लिए सुविधाजनक स्थिति प्रदान करता है। जनसंख्या के उच्च घनत्व उन क्षेत्रों में ज्यादा है जलवायु अनुकूल पायी जाती है। लेकिन कठोर जलवायु, अर्थात बहुत गर्म, बहुत ठंडा, बहुत सूखा, बहुत नम क्षेत्रों में कम घनत्व होता है। भारत में शुष्क क्षेत्र जैसे राजस्थान एवं अति ठंडा क्षेत्र जैसे जम्मू और कश्मीर घाटी, हिमाचल प्रदेश और उतराखण्ड में निम्न जनसंख्या घनत्व है।

(iii) ***मृदा:*** मनुष्य कृषि के लिए मिट्टी की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। इसलिए ऊपजाउ मृदा के क्षेत्रों, में बड़ी आबादी का भरण पोषण होता है। यही कारण है उपजाऊ मिट्टी के क्षेत्रों जैसे उत्तर भारत और तटीय जलोढ़ मैदानों में जनसंख्या के उच्च घनत्व है। दूसरी ओर कम उपजाऊ मिट्टी के क्षेत्रों जैसे राजस्थान, छत्तीसगढ; और मध्यप्रदेश के कुछ हिस्सों में जनसंख्या का कम घनत्व है।

2. सामाजिक-आर्थिक कारक

जनसंख्या का घनत्व और वितरण निम्न सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों पर भी निर्भर है:

(i) ***औद्योगिकरण और शहरीकरण:*** जैसा कि आप हमेशा देखते है, उद्योग धंधों वाली जगहों पर बड़ी संख्या में लोग निवास करते है। वे शहरी क्षेत्रों और नगरों में रहना पसंद करते हैं। खनिज संसाधनों से समृद्ध क्षेत्र भी बड़ी जनसंख्या को आकर्षित करते है। झारखंड के खनन क्षेत्रों में बहुत घनी आबादी है। क्योंकि इन क्षेत्रों में कई आर्थिक गतिविधियाँ है जो रोजगार के अवसरों को बढ़ा देती है। इसके अलावा, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएँ भी इन क्षेत्रों में बेहतर हैं। हम जानते हैं कि भारत के बड़े नगरो जैसे दिल्ली, मुंबई, बंगलौर, हैदराबाद, चेन्नई, कोलकाता और कई अन्य जनसंख्या के उच्च घनत्व के केन्द्र है।

(ii) ***परिवहन और संचार:*** अन्य भागों की तुलना में देश के कुछ भागों में परिवहन और संचार सुविधाओं के साथ उत्तरी मैदानी क्षेत्र में परिवहन काफी अच्छा है परन्तु उत्तर पूर्वी क्षेत्रों में यह व्यवस्था उतनी अच्छी नहीं है। ऐसे सभी क्षेत्रों में जहाँ सार्वजनिक सुविधाओं का विकास अच्छा है, अपेक्षाकृत उच्च जनसंख्या घनत्व मिलता है। कभी-कभी हम पाते हैं कि सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व के स्थानों की भी घनी आबादी है।

सभी उपरोक्त कारक एक संयोजन में कार्य करते हैं। हम गंगा के मैदान में उच्च जनसंख्या घनत्व का उदाहरण ले सकते हैं। यह कई कारकों के संयोजन के कारण है जैसे चौरस मैदान, उपजाऊ मृदा, अनुकूल जलवायु, औद्योगिकरण, शहरीकरण और अपेक्षाकृत अच्छी तरह से परिवहन और संचार के साधनों का विकसित होना है। दूसरी ओर, बीहड़ पहाड़ी इलाके, प्रतिकूल

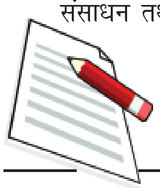

जलवायु, निम्न परिवहन के साधन और संचार जैसे कारकों के कारण अरूणाचल प्रदेश में जनसंख्या का कम धनत्व है।

क्रियाकलाप 14.2

पाठ 11: हमारी मातृभूमि का चहकता चेहरा से उतरी पर्वत श्रेणी और प्रायद्वीपीय पठार के बारे में भूआकृतिक वर्गीकरण मानचित्रों के माध्यम से अध्ययन कीजिए। इस पाठ के चित्र संख्या 14.1 14.2 और 14.4 में जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व दर्शाया गया है। उपरोक्त चित्रों को ध्यान में रखते हुए पाठ 11 पढ़ें।

मानचित्रों का विश्लेषण करते हुए सहसम्बध स्थापित कीजिए और उन क्षेत्रों की पहचान कीजिए जहाँ प्राकृतिक परिस्थितियाँ मानव के लिए अनुकूल है।

पाठगत प्रश्न 14.2

1. 2001 की जनगणना के अनुसार निम्नलिखित राज्यों में से किसमें सबसे ज्यादा जनसंख्या का घनत्व है?

   अ) पश्चिम बंगाल　　ब) केरल
   स) तमिलनाडु　　ड) उत्तर प्रदेश

2. एक जिले की जनसंख्या 3,00,000 और इसका क्षेत्रफल 1000 वर्ग किमी है। जनसंख्या का घनत्व क्या होगा?

   अ) 150 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी　　ब) 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
   स) 250 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी　　द) 300 व्यक्ति प्रति वर्ग मी

3. दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और चेन्नई जैसे बड़े नगरो में जनसंख्या के उच्च घनत्व के लिए जिम्मेदार चार महत्वपूर्ण कारकों का उल्लेख कीजिए।
4. उत्तराखंड में जनसंख्या का घनत्व कम क्यों है? दो कारण दीजिए

14.4 जनसंख्या वृद्धि

किसी भी देश में मानव संसाधन के रूप में जनसंख्या का गुणात्मक सम्बन्ध यहाँ के जनसंख्या वृद्धि के प्रतिरूप से काफी प्रभावित होता हैं। जनसंख्या की वृद्धि सकारात्मक या नकारात्मक हो सकती है। हालांकि दुनिया की आबादी अभी भी बढ़ रही है, कुछ ऐसे भी देश है जहाँ जनसंख्या घट रही है। जनसंख्या परिवर्तन की दोनों स्थितियों में मानव संसाधन की गुणवत्ता पर उनके प्रभाव पड़ता है। यदि जनसंख्या तेज दर से बढ़ती है, तो जनसंख्या और देश के संसाधनों के बीच एक असंतुलन की स्थिति बनेगी।

भारत की जनसंख्या लंबे समय से बढ़ रही हैं। वर्ष 1901 में 238 करोड़ की आबादी से, वह वर्ष 2001 में 1028 करोड़ हो गई है। जनसंख्या में यह वृद्धि एक सदी की अवधि में चार गुना बढ़ी है। दूसरी ओर पश्चिमी यूरोपीय देशों में जनसंख्या घट रही है। ऐसा क्यों है? हम उन कारकों की पहचान करते है जो जनसंख्या वृद्धि के लिए जिम्मेदार है।

जनसंख्या वृद्धि के कारक

किसी भी देश की जनसंख्या वृद्धि में तीन प्रमुख जनसांख्यिकीय कारक होते है– (क) जन्म दर, (ख) मृत्यु दर, और (ग) प्रवास। जन्मदर और मृत्युदर को प्रभावित करने वाले अनेकों सामाजिक-आर्थिक कारक है जो अंततः जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करते है। हालांकि चित्र संख्या 14.5 से आप स्वयं ही देख सकते है कि भारत में तीव्र गति से वृद्धि का कारण उच्च जन्मदर एवं निम्न मृत्युदर है। राष्ट्रीय स्तर पर प्रवास जनसंख्या वृद्धि में एक नगण्य कारक है। यद्यपि स्थानीय और क्षेत्रीय स्तरों पर प्रवास का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

जनसंख्या का जन्म, मृत्यु और वृद्धि दर
: (1961-2001)

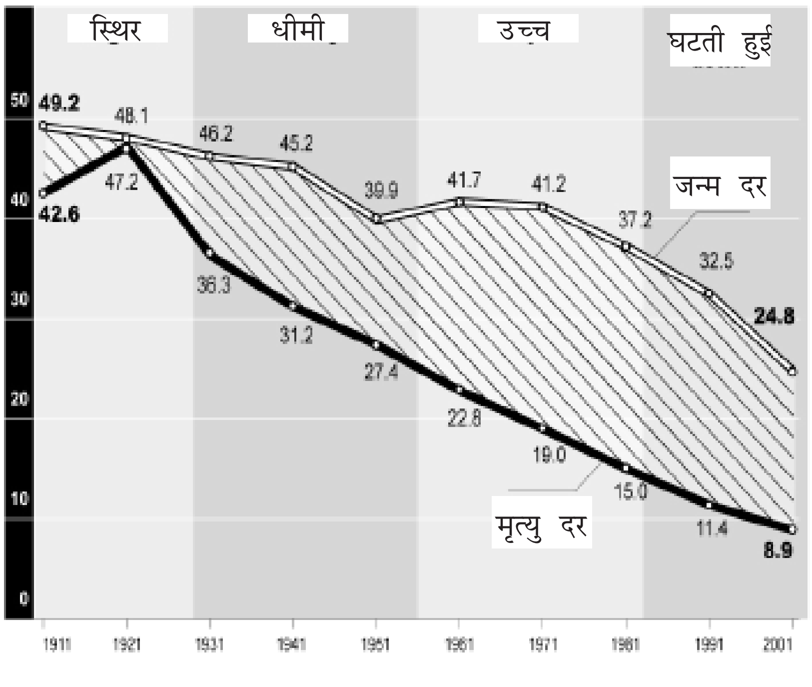

चित्र 14.5 जनसंख्या की वृद्धि

यदि आप चित्र संख्या 14.5 को ध्यान से अध्ययन करें तो आप पाएंगे कि मृत्यु दर 1921 के बाद से गिरावट रही है। इसी अवधि में जन्म दर में भी गिरावट आनी शुरू हो गई। परन्तु मृत्यु दर में गिरावट की दर जन्मदर में गिरावट की से ज्यादा रही। यही कारण है कि जन्म दर एवं मृत्युदर के बीच का अंतर बढ़ता चला गया जिसके कारण जनसंख्या में वृद्धि हुई।

जब आप चित्र संख्या 14.6 पर दिए गये दशकीय जनसंख्या वृद्धि पर नजर दौड़ाते है तो भी यह बात स्पष्ट हो जाती हैं जनसंख्या की दशकीय वृद्धि में मामूली गिरावट आई है 1981 से 1991 तथा 1991 से 2001 के बीच। यह एक सुखद संकेत है। परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि घटते वृद्धि दर के बावजूद भी शुद्ध जनसंख्या में वृद्धि लगातार होती चली जा रही है। सन 1901 से 2001 तक में बीच जन्म दर और मृत्युदर के परिणाम के आधार पर पूरी अवधि को चार भागों में बांटा जाता है स्थिर, क्रमिक या धीमी वृद्धि उच्च वृद्धि और घटते अवस्था की जनसंख्या वृद्धि।

क्या आप जानते हैं

एक निश्चित भूभाग पर किसी दिए वर्ष में प्रति हजार जनसंख्या के तुलना में कुल जन्मे बच्चों की संख्या शुद्ध जन्म दर कहलाती है। इसे जन्मदर भी कहते है। अत: –

जन्मदर =

मान लीजिए किसी जिले में एक वर्ष के दौरान जिंदा जन्मे बच्चों की संख्या 800 है और अर्द्धवार्षिक जनसंख्या 25,000 है, तो

$$\text{जन्मदर} = \frac{800}{25{,}000} \times 1000 = 32 \text{ प्रति हजार जनसंख्या}$$

$$\frac{\text{किसी क्षेत्र में एक वर्ष के अंतर्गत जिंदा जन्में बच्चों की संख्या}}{\text{उसी क्षेत्र में मध्य वर्ष की जनसंख्या}} \times 1000$$

मृत्यु दर: एक विशेष क्षेत्र के तहत दिए गए वर्ष में प्रति हजार जनसंख्या में से हाने वाली मौतों की संख्या शुद्ध मृत्यु दर कहलाती है। सामान्य तौर पर इसे मृत्युदर भी कहते है। अत:–

$$\text{मृत्यु दर} = \frac{\text{किसी क्षेत्र में एक वर्ष के अंतर्गत मरने वाले लोगों की संख्या}}{\text{उसी क्षेत्र में मध्य वर्ष की जनसंख्या}} \times 1000$$

मान लीजिए किसी एक जिले में एक वर्ष के दौरान मरने वाले व्यक्तियों की संख्या 600 हैं और अर्द्धवार्षिक जनसंख्या 25000 है, तो

मृत्यु दर = = 24 प्रति हजार जनसंख्या

प्राकृतिक वृद्धि दर: प्राकृतिक वृद्धि दर जन्म दर और मृत्यु दर के बीच का अंतर है। इसलिए प्राकृतिक वृद्धि दर = जन्म दर – मृत्यु दर।

मान लीजिए कि किसी खास वर्ष में एक क्षेत्र के लिए जन्म दर 32 है ओर मृत्यु दर 24 है। तो प्राकृतिक वृद्धि 32 – 21 = 8 प्रति हजार जनसंख्या होगी।

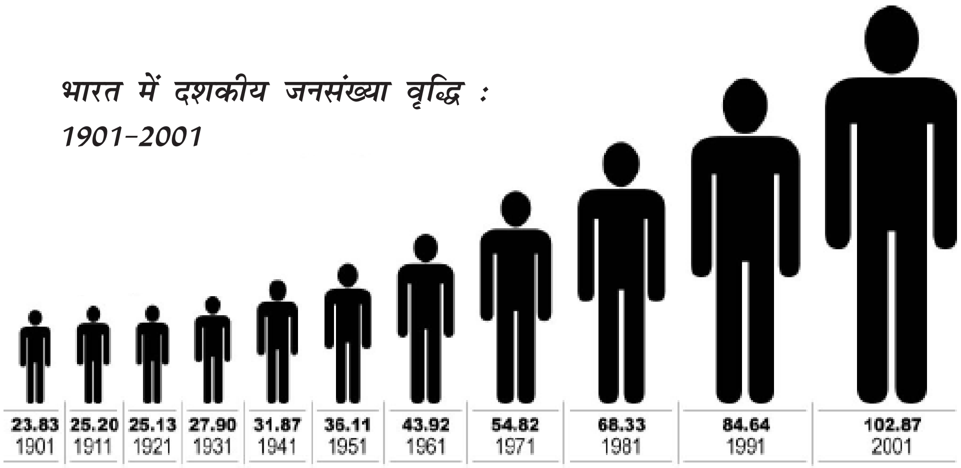

चित्र 14.6 भारत में दशकीय जनसंख्या वृद्धि (1901-2001)

जैसा कि हम 20वीं शताब्दी के आरंभ से देखते हैं, भारत की जनसंख्या 1921 को छोड़कर शुद्धरूप में बढ़ी है। 1921 को भारतीय जनसंख्या की जनसांख्यिकीय इतिहास में महान विभाजन वर्ष कहा जाता है।

आइये भारत में तेज जनसंख्या वृद्धि दर के कारणों को समझने की कोशिश करें। सबसे महत्वपूर्ण कारकों में निरक्षरता, शिक्षा के निम्न स्तर, असंतोषजनक स्वास्थ्य, पोषण की स्थिति और गरीबी है। पुरूष बच्चो की वरीयता, छोटी उम्र में शादी, धार्मिक विश्वास और महिलाओं का समाज में निम्नस्तर आदि कुछ अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक कारक हैं।

पाठगत प्रश्न 14.3

1. यदि एक क्षेत्र में, जन्म दर 45 प्रति हजार है और मृत्यु दर 25 प्रति हजार है, तो प्राकृतिक वृद्धि दर कितना होगा?

   अ) 15 प्रति हजार   ब) 18 प्रति हजार पति
   स) 20 प्रति हजार   द) 25 प्रति हजार

2. भारत में तीव्र जनसंख्या वृद्धि के लिए निम्न में से कौन सा प्रमुख कारण है?
   अ) उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर
   ब) कम जन्म दर और कम मृत्यु दर
   स) उच्च जन्म दर और कम मृत्यु दर
   द) कम जन्म दर ओर उच्च मृत्यु दर

3. सन 1921 को, जनसांख्यिकीय महान विभाजन वर्ष क्यों कहा जाता है?

14.5 जनसंख्या संरचना

हमने अभी तक जनसंख्या के वितरण, घनत्व और वृद्धि का अध्ययन किया है। आप समझते हैं कि जन्म दर और मृत्यु दर के बीच का अंतर जनसंख्या परिवर्तन की गति और प्रवृत्ति का निर्धारण करता है। वास्तव में यह प्रभाव जनसंख्या संरचना को प्रमाणित करता है। यह न केवल जनसंख्या वृद्धि की गति बल्कि मानव संसाधन की गुणवत्ता को निर्धारित करने के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। क्या आप जानते हैं–जनसंख्या संरचना क्या हे? जनसंख्या संरचना जनसंख्या का वर्णन करता है जिसमें विभिन्न विशेषताओं द्वारा परिभाषित किया जाता है जैसे– उम्र, लिंग, ग्रामीण, शहरी या साक्षरता की स्थिति। इसलिए हम, भारत में जनसंख्या संरचना के निम्नलिखित पहलुओं को समझने की कोशिश करेंगे:

(i) आयु संरचना,

(ii) लिंग संरचना,

(iii) ग्रामीण - शहरी, संरचना और

(iv) साक्षरता

(i) *आयु संरचना*

देश के वर्तमान और भविष्य के विकास के लिए आबादी की उम्र संरचना का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। सामान्यतया आबादी को तीन वर्गों में रखा जाता है– बच्चे (0–14 वर्ष), वयस्क (15–60 वर्ष) और वृद्ध (60 वर्ष की उम्र से ज्यादा)। इन तीन वर्गों में भारतीय आबादी की उम्र संरचना को चित्र संख्या 14.7 दर्शाता है। यदि हम 1971 के आंकड़ों की तुलना करें तो यह स्पष्ट है कि बच्चों की संख्या में गिरावट और वयस्कों की संख्या में वृद्धि हो रही है।

जनसंख्या के चुने हुए बोर्ड समूह के लिए उम्र संरचना

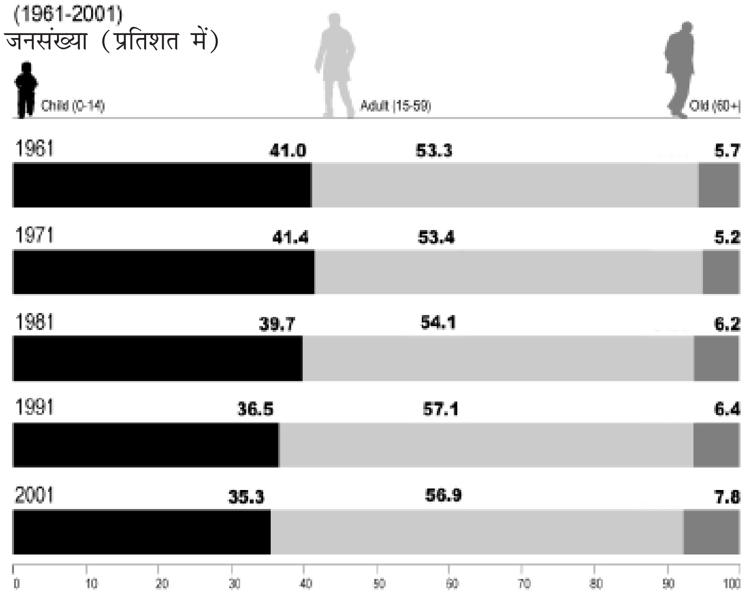

चित्र 14.7 : आयु संरचना

हालांकि, वृद्धों की आबादी भी बढ़ रह है। वृद्ध और बच्चों की कुल आबादी को आश्रित आबादी कहते हैं। जब आश्रित आबादी की संख्या बढ़ती है तो निर्भरता अनुपात ज्यादा हो जाता है। इसके कारण सरकार को बच्चों के विकास और वृद्धों के कल्याण पर ज्यादा खर्च करना पड़ता है। अगर ऐसा न हो तो इन्हीं संसाधनों को अन्य विकास के मदों में इस्तेमाल किया जा सकता है।

? क्या आप जानते हैं

$$\text{निर्भरता अनुपात} = \frac{\text{निर्भर जनसंख्या (0-14 वर्ष तथा 60 वर्ष से अधिक)}}{\text{कार्यरत जनसंख्या (15-59 वर्ष)}} \times 100$$

मान लीजिए किसी एक जिले की निर्भर जनसंख्या (0–14 वर्ष तथा 60 वर्ष से अधिक) 7000 है और कार्यरत जनसंख्या (15–59 वर्ष) 18000 है। तो

निर्भरता अनुपात

$$= \frac{7000}{18000} \times 100 = 38.89$$

इसका तात्पर्य यह हुआ कि प्रत्येक 100 व्यक्तियों में 39 व्यक्ति निर्भर और 61 व्यक्ति कार्यरत हैं।

सोच विचार

अपने दादा-दादी की आयु 60 वर्ष अधिक है। वे आश्रित जनसंख्या समूह में हैं। क्या आपको लगता है कि वे बोझ हैं? क्या वे परिवार और समाज के कल्याण की दिशा में योगदान नहीं करते हैं? यदि 'हाँ', तो कैसे योगदान दे रहे हैं? यदि 'नहीं' तो योगदान क्यों नहीं दे रहे हैं।

'किशोर' एक अलग जनसंख्या समूह के रूप में

जनसंख्या के उम्र संरचना को समझने के लिए विशिष्ट समूह के रूप में युवावर्ग पर जोर देना नविनतम दृष्टिकोण है। परंपरागत रूप से जनसंख्या को हम तीन चरणों में विभाजित करते हैं। बचपन, व्यस्कता और बुढ़ापा। लेकिन जैसा कि हम देखते हैं, कुछ लोग न तो बच्चे और न ही वयस्क। यदि आप अपने जीवन के उस दौर में हैं, तो आप अपने माता-पिता या अन्य वयस्कों से कहते हुए सुना होगा, 'क्यों तुम यह कर रहे हो?' अब तुम एक बच्चा नहीं हो। दूसरे समय वे ही वयस्क भी कहते होंगे, 'यह तुम कैसे कर सकते हो?' तुम अभी वयस्क नहीं हो। वास्तव में, बचपन और वयस्कता के बीच जीवन के चरण को (10 साल और 19 या कुछ और साल के बीच) किशोरावस्था के रूप में जाना जाता है। इस आयु वर्ग के व्यक्तियों को किशोर के रूप में पहचानते हैं। किशोर के बारे में बेहतर जानकारी के लिए बॉक्स में दिए गये उदाहरण को आप पढ़ सकते है।

क्या आप जानते हैं

किशोर से क्या मतलब है?

संयुक्त राष्ट्र की परिभाषा उम्र की संख्या के आधार पर इस तरह से है:

- किशोर : 10-19 वर्ष के बच्चें
- युवा : 15-24 वर्ष के बच्चे
- कमसिन : 10-24 वर्ष के बच्चें

आबादी समूह के रूप में किशोरों को मात्र उनके उम्र के आधार पर ही नहीं देखा जा सकता है। क्योंकि किशोरावस्था की अवधि हरेक व्यक्ति के लिए अलग हो सकती है। किशोर व्यक्ति के विकासात्मक अवधि के लिए इस्तेमाल किया जाता है जो बाल्यावस्था के अंत से व्यस्क अवस्था के प्रारम्भ तक होता है। किशोरावस्था को उस अवधि के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसमें शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक परिपक्वता आती है जो यौवनारंभ से यौवनपूर्ण प्रजनन परिपक्वता तक होती है।

जैसा कि तालिका संख्या 14.1 में दिखाया गया है, किशोर भारत की कुल आबादी का लगभग 22 प्रतिशत भाग विशिष्ट जनसंख्या समूह के रूप में हैं। यह प्रतिशत 2001 के जनगणना के अनुसार है। उनकी संख्या अभी भी बढ़ रही है और वर्तमान में (2009) में उनके प्रतिशत हिस्सेदारी बढ़ गयी है। राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 के अनुसार भी कम ध्यान दिए गये समूह के रूप में माना गया है क्योंकि उनकी जरूरतों को अभी तक विशिष्टतौर पर संबोधित नहीं किया गया है। यह जनसंख्या नीति किशोरों की विभिन्न आवश्यकताओं को संबोधित करने के लिए विभिन्न रणनीतियों का उल्लेख करती है। ये हैं (i) किशोरावस्था में होने वाली शारीरिक, शरीरक्रियात्मक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक परिवर्तन व विकास के बारे में पूर्ण एवं ठीक-ठीक जानकारी उपलब्ध करना (ii) खतरनाक स्थितियों से बचने और सही शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए उचित व जरूरी जीवन कौशल विकसित कर उन्हें सशक्त

भारत में लिंग अनुपात का रूझान (1901-2001)

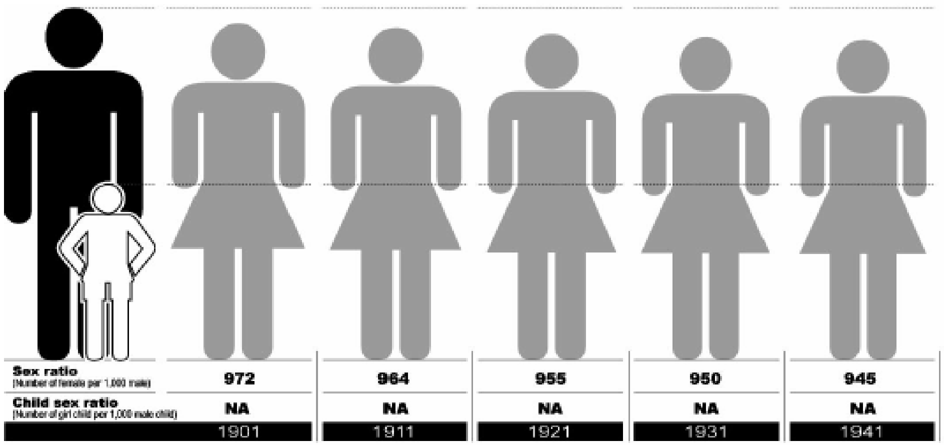

चित्र 14.8 (अ) : भारत में लिंग अनुपात का रूझान

करना; (iii) आहारपूरक और पोषण सेवाएं उपलब्ध कराना; और (iv) जरूरी स्वास्थ्य और परामर्श सुविधाएं उन्हें उपलब्ध कराना।

तालिका 14.1 : लिंग के अनुसार भारत में किशोर (10–19 वर्ष) (संख्या हजार में) जनसंख्या 1991 और 2001 के अनुसार

जनगणना वर्ष	किशोरों की कुल संख्या	कुल जनसंख्या का प्रतिशत	पुरुष का प्रतिशत	कुल पुरुष का प्रतिशत	महिला	कुल महिला
1991	181419	21.4	95969	21.9	85450	21.0
2001	225061	21.9	119571	22.4	105490	21.2

क्रियाकलाप 14.3

तालिका संख्या 14.1 को देखिए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर ढूढ़िए:

1. किशोर लड़कियों की संख्या किशोर लड़कों की तुलना कम क्यों हैं? यद्यपि जैविक आधार पर लड़कियों की संख्या अधिक होनी चाहिए थी।
2. 1991 से 2001 के दौरान पुरुष और महिला किशोरों के प्रतिशत की प्रवत्ति क्या है?
3. किशोरों को कम ध्यान दिए गये समूह के रूप में क्यों माना जाता है?
4. क्या आप किशोरों की जरूरतों की एक सूचि तैयार कर सकते हैं जिसे समाज द्वारा संबोधित किया जाना चाहिए।

(ii) *लिंग संरचना*

मानव संसाधन के रूप में किसी भी देश की जनसंख्या की लिंग संरचना एक महत्वपूर्ण गुणात्मक सूचक है। वास्तव में, यह मुख्य रूप से लिंग अनुपात के आधार पर समझा जाता है। लिंग अनुपात प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या के रूप में परिभाषित किया जाता है। किसी भी समय पर पुरुषों और महिलाओं के बीच मौजूदा समानता स्थिति मापने के लिए यह एक

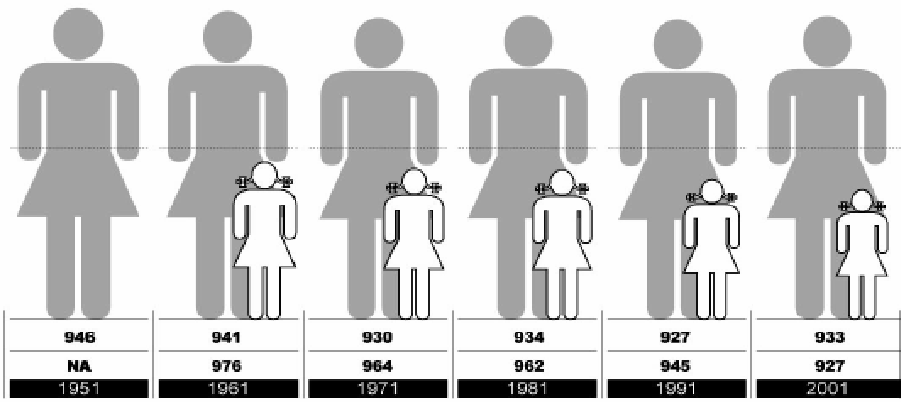

आंकड़ा 14.8 (ख) : भात में लिंग अनुपात में रुझान

महत्वपूर्ण सामाजिक सूचक है। लिंग अनुपात अनुकूल होना चाहिए। लेकिन हमारे देश में लिंग अनुपात हमेशा से महिलाओं के लिए प्रतिकूल बनी हुई है, और चिंता की बात है कि यह गिरावट लगातार बनी हुई है। वर्ष 1901 में प्रति 1000 पुरुषों पर 972 महिलाएं थी। वर्ष 2001 में, यह घटकर 933 आ गया है। इस प्रवृत्ति चित्र संख्या 14.8 (क) और (ख) में दिखाया गया है।

क्या आप जानते हैं

लिंग अनुपात की गणना निम्न प्रकार है :

$$\text{लिंग अनुपात} = \frac{\text{एक विशेष क्षेत्र में कुल स्त्रियों की संख्या}}{\text{उसी क्षेत्र में कुल पुरुषों की संख्या}} \times 1000$$

मान लीजिए किसी एक जिले में महिलाओं की कुल संख्या 12000 है और पुरुषों की कुल संख्या 13000 है, तो:

लिंग अनुपात = $\frac{12000}{13000} \times 1000 = 923$ महिलाएं प्रति एक हजार पुरुष

आइये विचार करें कि क्यों हमारे देश में लिंग अनुपात प्रतिकूल है? यह मुख्य रूप से हमारे समाज में प्रचलित महिलाओं के खिलाफ भेदभाव है। अनुकूल लिंग अनुपात मात्र एक राज्य और एक संघ शासित क्षेत्र में ही है, यह 1058 केरल राज्य और 1001 पांडिचेरी संघ राज्य क्षेत्र में हैं। अब इसे पुडुचेरी के नाम से जाना जाता है।

बाल लिंग अनुपात

देश में बाल लिंग अनुपात में गिरावट की प्रवृत्ति बड़ी चिंता की बात है। 0–6 वर्ष की आयु (बच्चा जनसंख्या) में लिंग अनुपात लगातार कम होता जा रहा है। जबकि 1991 और 2001 की जनगणना के अनुपात समग्र लिंग अनुपात में मामूली सा सुधार दर्शाता है जबकि 0–6 वर्ष के बीच की अवधि में लिंग अनुपात में तेजी से कमी आई है। 28 राज्यों और 7 संघ शासित क्षेत्रों में से केवल चार राज्यों, यानी केरल, मिजोरम, सिक्किम, त्रिपुरा और लक्षद्वीप केन्द्र शासित क्षेत्र में ही बाल लिंग अनुपात समग्र लिंग अनुपात के अनुरूप है। बुरी तरह से प्रभावित राज्यों में हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, पंजाब और उत्तराखंड और संघ शासित क्षेत्रों में चंडीगढ़ और राज्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली हैं। बाल लिंग अनुपात इस बात को दर्शाता है कि इन राज्यों में कन्या भ्रूणहत्या और कन्या शिशुहत्या की प्रथा आज भी है। पता चलता है कि यह व्यवहार एक सभ्य समाज के नियमों के खिलाफ है।

(iii) *ग्रामीण – शहरी संरचना*

भारत किसानों की भूमि और गांवों का देश रहा है। बीसवीं सदी के शुरुआत में दस लागों में से नौ लोग गांवों में रहते थे। हमारी आबादी का लगभग तीन चौथाई लोग अभी भी ग्रामीण

क्षेत्रों में रहते हैं। भारत में शहरी क्षेत्र उन्हें कहा जाता है जहाँ तीन-चौथाई से ज्यादा लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से गैर कृषि कार्य में संलग्न हों, जनसंख्या कम से कम 5000 तथा जनसंख्या घनत्व 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी हो।

ऐसा लगता है, (चित्र संख्या 14.9 देखें) हम लोग शहरीकरण की ओर बहुत ही तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। परन्तु इसके साथ इसके दुश्परिणाम जैसे आवास की कमी, जल, बिजली, और पर्यावरण पर अतिक्रमण आदि सन्निहित हैं।

ग्रामीण और शहरी जनसंख्या : 1951-2001

वर्ष	ग्रामीण जनसंख्या (मिलियन)	शहरी जनसंख्या (मिलियन)	ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत	शहरी जनसंख्या का प्रतिशत
1951	299	62	82.7	17.3
1961	360	79	82.0	18.0
1971	439	109	80.1	19.9
1981	524	159	76.77	23.3
1991	629	218	74.3	25.7
2001	742	285	72.2	27.8

चित्र 14.9 : ग्रामीण - शहरी बदलाव

(iv) *साक्षरता*

साक्षरता किसी भी समाज के विकास का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। जैसा कि जनगणना रिपोर्ट में परिभाषित किया गया है- सात वर्ष या उससे ज्यादा का व्यक्ति किसी भी भाषा में समझदारी के साथ लिखना और पढ़ना जानें। 1951 में हमारे देश में साक्षरता दर 18.33 प्रतिशत थी। यह 2001 में बढ़कर 65.37 प्रतिशत हो गई है। हमारे देश के विभिन्न राज्यों में केरल में उच्चतम साक्षरता, 90.86 प्रतिशत है। यह मिजोरम में 88.49 प्रतिशत और लक्षद्वीप में 97.52 प्रतिशत है। लेकिन सामान्य रूप से पुरुषों की तुलना में महिला साक्षरता दर कम है (चित्र संख्या 14.10)।

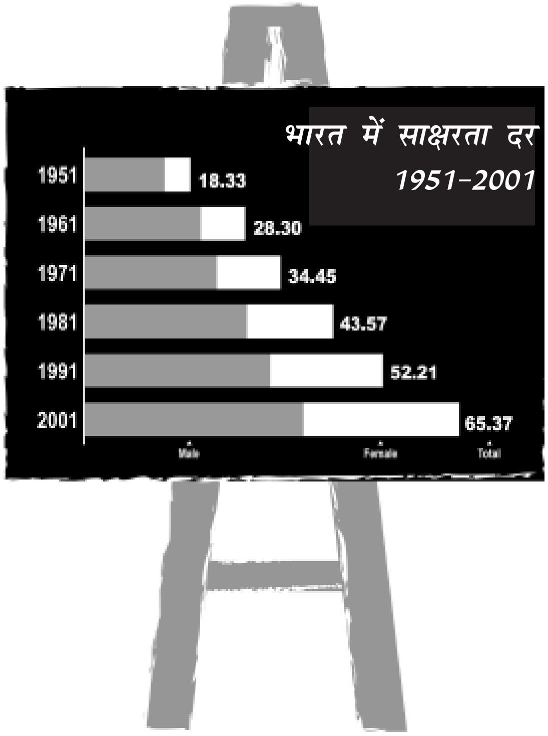

चित्र 14.10 : साक्षरता

क्रियाकलाप 14.4

अपने आसपास से लगभग 10-15 घरों से निम्नलिखित जानकारी प्राप्त कीजिए।

1. साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति का नाम ....
2. उम्र (वर्षों में) ....
3. शैक्षणिक योग्यता ....
4. परिवार में कमाई करने वाले व्यक्तियों की संख्या ....
5. सदस्यों की कुल संख्या : पुरुष .... स्त्री ....
6. आयु समूहों में परिवार के सदस्यें की संख्या
   (क) 14 वर्ष की उम्र तक : ....
   (ख) 15 वर्ष से 60 वर्ष तक ....
   (ग) 60 वर्ष से अधिक ....
7. ऊपर एकत्रित आंकड़ों के आधार पर गणना और विश्लेषण कीजिए :
   (क) लिंग अनुपात ....
   (ख) निर्भरता अनुपात ....
      (i) 14 वर्ष से कम .... और इसकी प्रतिशत ....
      (ii) 60 से अधिक वर्षों .... और इसकी प्रतिशत ....

इस प्रकार हम समझ पाये हैं कि किसी भी देश की आबादी वहाँ का सबसे बड़ा संसाधान मात्र संख्या के आधार पर ही नहीं बन सकता। देश के लिए जनसांख्यिकीय विशेषताओं की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए देश को एक बड़ा-सा निवेश करना पड़ता है ताकि बड़ी संख्या को एक संसाधन के रूप में परिवर्तित किया जा सके। देश की आबादी को मानव संसाधन के रूप में परिवर्तित करने के लिए दुनिया के कई अन्य देशों की तरह भारत भी नीतियों और कार्यक्रमों को लागू करता है। इसलिए अगले अनुभाग में हम महिलाओं के सशक्तिकरण के संबंध में भारत सरकार की जनसंख्या नीतियों को समझने की कोशिश करेंगे।

पाठगत प्रश्न 14.4

1. 2001 की जनसंख्या के अनुसार, भारत का लिंग अनुपात :
   अ) 920　　ब) 927
   स) 933　　द) 943
2. 2003 की जनगणना के अनुसार शहरी जनसंख्या का प्रतिशत है :
   अ) 27.8　　ब) 26.7
   स) 25.7　　द) 24.0
3. अगर निर्भरता अनुपात अधिक हो तो क्या परिणाम हो सकता है?
4. भारत में प्रतिकूल लिंग अनुपात के लिए जिम्मेदार कोई भी दो कारण बताएँ।

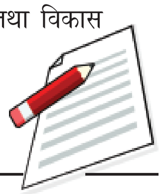

14.6 भारत में जनसंख्या नीतियां

क्या आप जानते हैं कि भारत में जनसंख्या वृद्धि और जनसंख्या नीति अपनाने की जरूरत पर विचार-विमर्श स्वतंत्रता से पहले भी शुरू हो गया था? अंतरिम सरकार द्वारा 1938 में एक राष्ट्रीय योजना समिति स्थापित की गई जिसने जनसंख्या पर एक उप-समिति बनाई। इस समिति ने 1910 में अपने संकल्प में कहा, ''सामाजिक अर्थव्यवस्था परिवार की खुशी और राष्ट्रीय योजना के हित में परिवार नियोजन और बच्चों की सीमा आवश्यक है।''

1952 में भारत दुनिया का पहला देश बना जो राष्ट्रीय जन्म जनसंख्या परिवार नियोजन पर बल देते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम का उद्देश्य जनम दर को कम कर ''राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की आवश्यकता के स्तर पर जनसंख्या को स्थिर करना'' था। भारत जब से समय-समय पर जनसंख्या नीति में सुधार करता रहा है जिसके विस्तार से जानकारी संगत किताबों से प्राप्त कर सकते हैं अथवा आप उच्च कक्षा में पढ़ सकते हैं। वर्तमान में हम नवीनतम जनसंख्या नीति को समझने की कोशिश करेंगे जो भारत सरकार द्वारा 2000 में अपनाया गया था।

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 जनसंख्या के मुद्दों पर अपने दृष्टिकोण में गुणात्मक परिवर्तन दर्शाता है। यह सीधे जनसंख्या नियंत्रण पर जोर नहीं देता है। इसमें कहा गया है कि आर्थिक और सामाजिक विकास का उद्देश्य लोगों के जीवन में गुणात्मक सुधार करना, उनके कल्याण में वृद्धि करना, समाज में लोगों को सुअवसर विकल्प प्रदान कर उन्हें उत्पादनकारी परिसम्पति के रूप में विकसित करना है। जनसंख्या स्थिर करना सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए अनिवार्य आवश्यकता है। राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 के तात्कालिक उद्देश्य गर्भनिरोधक, स्वास्थ्य देशभाल में बुनियादी सुविधाओं, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के अपूर्ण जरूरतों को पूरा करना है। इसके साथ ही साथ प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य की देखभाल के लिए एकीकृत सेवा प्रदान करना है। मध्यकालीन उद्देश्य कुल प्रजनन दर को 2010 तक प्रति स्थापन दर तक लाना है जिसके लिए अंतर क्षेत्रीय संचालन रणनीतियों की जोरदार कार्यान्वन नीति है।

2045 तक सतत आर्थिक विकास, सामाजिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के साथ एक स्थिर जनसंख्या प्राप्त करना है।

? क्या आप जानते हैं

प्रतिस्थापन स्तर पर कुल जननक्षमता दर : यह कुल प्रजनन दर है जिसमें एक नवजात बच्ची अपने जीवन काल में औसतन एक बेटी को जन्म देती है। अधिक परिचित शब्दों में हर औरत उतने ही बच्चे को जन्म देती है जिससे वह प्रतिस्थापित हो रही है। इसका परिणाम शून्य जनसंख्या वृद्धि होता है। इस प्रकार की जनसंख्या उम्र के आधार पर वितरण एक-सा होता है जहां समान दर से जनसंख्या में वृद्धि होती है। जहाँ जन्म और मृत्युदर एक-सा है जनसंख्या स्थिर रहती है। और एक स्थिर दर से बढ़ती है। जहां प्रजनन और मृत्यु दर बराबर हैं, जनसंख्या स्थिर रहती है।

मानव संसाधन के रूप में जनसंख्या की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए महिलाओं का सशक्तिकरण बहुत महत्वपूर्ण है। भारत में कुल जनसंख्या का लगभग 50 प्रतिशत भाग महिलाओं का है फिर भी उन्हें भेदभाव का सामना करना पड़ता है और उन्हें निम्न समझा जाता है। सरल तर्क के अनुसार यह मानव संसाधन के रूप में अपनी आबादी के आधे के योगदान को राष्ट्र से वंचित किया है। जो भी विकसित विश्व में देखा और अनुभव किया जाता है यह उसके विरूद्ध है। हमारे देश में महिलाओं की भूमिका खाना पकाने से परिवारों की देखभाल करने के लिए सीमित कर दिया गया है। समाज उनके प्रति हर प्रकार के भेदभाव, दुर्व्यवहार और अपराध के लिए मूक दर्शक है।

यह आप भारतीय संविधान के अनुच्छे 14, 15, 16, 19, 39, 42, 51म को पढ़ें तो पता चलेगा कि सभी के लिए न्याय और समानता को सुनिश्चित करने के लिए प्रावधान है। कई तरह के कानून पारित किए गये हैं जैसे विशेष विवाह अधिनियम 1954, गर्भावस्था की चिकित्सीय समापन अधिनियम 1971 और 1978 की बाल विवाह रोकथाम (संशोधन) अधिनियम। तथापि अभी तक महिलाओं की स्थिति बड़ी चिंता का विषय बना हुआ है।

इस दिशा में कुछ कदम उठाए गए हैं और यह आशा की जाती है कि महिलाओं की स्थिति में गुणात्मक परिवर्तन होगा। महिला सशक्तिकरण की दिशा में प्रमुख बढ़ावा तब मिला जब 73 वें और 74 वें संविधान संशोधन कर पंचायतीराज संस्थाओं और शहरी स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए सीटों में 33 प्रतिशत आरक्षण संसद द्वारा पारित किया गया। एक और संविधान संशोधन विधेयक पेश किया गया है जिसका उद्देश्य लोकसभा और राज्य विधान सभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करना है। महिलाओं के लिए एक राष्ट्रीय आयोग 1990 में पारित अधिनियम के माध्यम से 1992 में अस्तित्व में आया। आयोग को व्यापक कार्य आबंटित किया गया है। इसमें महिलाओं के हितों की सुरक्षा हेतू उनके साथ होने वाले दुर्व्यवहार की जानकारी की जांच पड़ताल करना भी शामिल है।

इसका परम उद्देश्य उन्नति, विकास और महिलाओं के सशक्तिकरण को बढ़ावा देना और भेदभाव के सभी रूपों को समाप्त करना है। ये कदम उनके जीवन और गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करेगा। महिला सशक्तिकरण की जरूरतों और प्रयासों के बारे में पढ़, सीख और समझ सकते हैं जब विस्तार से सामाजिक आर्थिक विकास और वंचित समूहों के सशक्तिकरण पाठ में बताया जाएगा।

पाठगत प्रश्न 14.5

1. मान लीजिए कि एक विशेष जिले का क्षेत्रफल 200 वर्ग किलोमीटर है। उसी जिले में जनसंख्या 17,400 26,200, 36,200, 42,200, 59,800 और 75,200 जनगणना वर्ष क्रमशः 1951, 1961, 1971, 1981, 1991 और 2001 के अनुसार है।

   (v) सभी छह जनगणना के लिए जनसंख्या घनत्व की गणना कीजिए।

   (ब) घनत्व में दशकीय परिवर्तन का पता लगाइये।

   (स) आपके जनसंख्या घनत्व की गणना के आधार पर कोई प्रवृति मिल सकती है?

आपने क्या सीखा

- जनसंख्या एक निश्चित समय पर देश में रहने वाले लोगों की कुल संख्या है। हमारी जनसंख्या की विभिन्न सामाजिक - आर्थिक और जनसांख्यिकीय पहलुओं के बारे में आंकड़े प्रत्येक दशक की शुरुआत में भारत सरकार द्वारा एकत्र किया जाता है। इसे जनगणना कहा जाता है।
- 2001 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या 1028.7 करोड़ है जो 1901 की जनगणना (238.3 करोड़) की तुलना में चार गुना से भी ज्यादा है। जन्म दर और मृत्यु दर के बीच के अंतर को प्राकृतिक वृद्धि दर कहा जाता है।
- जनसंख्या का घनत्व प्रति वर्ग किलोमीटर में व्यक्तियों की संख्या के रूप में परिभाषित किया गया है। भारत में इसका वितरण बेहद असमान है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में सबसे ज्यादा घनत्व 9294 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है। जबकि अरुणाचल प्रदेश में सबसे कम 14 व्यक्ति वर्ग किमी. है।
- लिंग अनुपात कुल आबादी में प्रति 1000 पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या के रूप में परिभाषित किया गया है। भारत में लिंग अनुपात प्रतिकूल है। यह 2001 की जनगणना के अनुसार 933 है। महिलाओं को सशक्त बनाकर लिंग अनुपात में सुधार किया जा सकता है।
- भारत की जनसंख्या को मुख्य रूप से तीन आयु समूह में बांटा गया है, (i) बच्चों (0-14 वर्ष), (ii) वयस्कों (15-60 वर्ष) और (iii) वृद्धों (60 वर्ष से अधिक)। बच्चे और वृद्ध मिलाकर निर्भर जनसंख्या है जो कुल जनसंख्या के 43 प्रतिशत है।
- एक जागृत समाज के लिए साक्षरता एक महत्वपूर्ण सूचक है। जनगणना के अनुसार सात वर्ष और उससे ज्यादा आयु के लोगों को पढ़ने और समझने के साथ लिखने में सक्षम होना चाहिए। हमारे देश में साक्षरता दर में बहुत सुधार हुआ है। यह 1951 में मात्र 18. 33 प्रतिशत था जो 2001 में बढ़कर 65.37 प्रतिशत हो गया है। केरल में उच्चतम साक्षरता दर 90.86 प्रतिशत है।
- राष्ट्रीय जनसंख्या नीति का मुख्य उद्देश्य जन्म और मृत्यु दर को कम करने, परिवार कल्याण, जनसंख्या स्थिरिकरण, आर्थिक विकास, सामाजिक विकास और पर्यावरण संरक्षण द्वारा लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार है। जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने हेतू उचित निवेश करके, हमारी बड़ी आबादी को देश के उत्पादक संसाधन के रूप में तब्दील किया जा सकता है।

पाठांत प्रश्न

1. लिंग अनुपात को परिभाषित करें। भारत में लिंग अनुपात प्रतिकूल क्यों है?
2. जनसंख्या वृद्धि दर को परिभाषित करें और इसके गणन की विधि समझाइये।

3. हम भारत की उम्र संरचना के आंकडों से क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं?
4. विशाल जनसंख्या को हम किस तरह संसाधन के रूप में बदल सकते हैं?
5. निम्नलिखित शब्दों को परिभाषित करें:
   (i) जनसंख्या का घनत्व
   (ii) जन्म दर, मृत्यु दर और वृद्धि दर.
   (iii) साक्षरता
6. राष्ट्रीय जनसंख्या नीति को समझाइये।
7. महिला सशक्तिकरण का क्या मतलब है? महिला सशक्तिकरण कैसे पूरे समाज / समुदाय को सशक्त करता है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

14.1

1. कुछ जिसे इस्तेमाल तथा पुनः इस्तेमाल किया जा सकता है।
2. शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण, विशेष प्रशिक्षण.

14.2

1. पश्चिम बंगाल
2. (द) 300 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
3. (i) औद्योगीकरण, (ii) शहरीकरण, (iii) रोजगार के अवसर, (iv) परिवहन और संचार के साधन
4. (i) ऊबड़ खाबड़ स्थलाकृति
   (ii) कठोर जलवायु हालत

14.3

1. (स) 20 प्रति हजार
2. (स) उच्च जन्म दर और निम्न मृत्यु दर
3. वर्ष 1921 में जनसंख्या में कमी दिखाता है लेकिन उसके बाद यह लगातार बढ़ रहा है।

14.4

1. (स) 933
2. (v) 27.8
3. सरकार निर्भर आबादी के कल्याण के लिए सरकार को बड़ा निवेश करना पड़ता है। इसलिए देश में अधिक से अधिक विकास कार्यों के लिए कम धन उपलब्ध होता है।
4. (i) महिलाओं के खिलाफ भेदभाव।

   (ii) महिला भ्रुण हत्या और शिशु हत्या।

14.5

वर्ष	(अ) घनत्व	(ब) घनत्व में दशकीय बदलाव	(स)
1951	87	–	जनसंख्या घनत्व की प्रवृत्ति में लगातार वृद्धि
1961	131	44	
1971	181	50	
1981	236	55	
1991	299	63	
2001	376	77	